International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में खेल पत्रकारिता का विकास एवं वर्तमान स्वरूप : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सवाई सिंह

शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

शोध सारांश

खेल हमें शारीरिक और मानसिक रूप से तो मजबूत बनाते ही हैं। साथ ही यह राष्ट्र भाव जागृत करने में भी सहायक सिद्ध हुए हैं। खेल अब मैदान तक ही सीमित नहीं रहे हैं, बल्कि ये राष्ट्रीय गौरव का भी प्रतीक माने जाने लगे हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक विजेता खिलाड़ियों को समाज में प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा मिलती हैं। ठीक इसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में आगे रहने वाले देश खुशहाल और समृद्ध माने जाते हैं। खेलों की इसी लोकप्रियता के कारण खेल पत्रकारिता का भी विकसित स्वरूप हमारे सामने आया है। खेलों की विभिन्न बारीकियों को समझने व समझाने में खेल पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। प्रस्तुत शोध में खेल पत्रकारिता के विभिन्न पड़ावों का अध्ययन करते हुए इसके विकास व वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

संकेत शब्द : खेल, खेल पत्रकारिता, भारत में खेल पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता का इतिहास।

प्रस्तावना

अक्सर बचपन में कहा जाता था कि 'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब'। लेकिन वर्तमान में खेलों की बढ़ती महत्वता ने इसके मायने बदल दिए हैं। अब इस प्रकार की कहावतें अपना संदर्भ खो चुकी हैं। खेलों की लोकप्रियता के कारण अब यह मात्र मनोरंजन और आनंद का विषय ही नहीं रह गया है बल्कि खेल करियर के रूप में भी महत्वपूर्ण विषय साबित हो रहा है। खेलों के पेशेवर रूप में आने से खिलाड़ियों की सुख-सुविधा, धन, ख्याति और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई हैं।

खेलों के लिए अंग्रेजी में स्पोर्ट (Sport) शब्द प्रयुक्त किया जाता है। Sport फ्रेंच के देस्पोर्ट (de sport) शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है अवकाश। खेल के लिए संस्कृत में 'क्रीडा' शब्द का प्रयोग होता है। अन्तिम परिणाम का विचार किये बिना कोई भी क्रिया जो उससे प्राप्त होने वाले आनन्द के लिए की जाती है, और जो रचनात्मक क्रियाओं का सुदृढ़ रूप है वही खेल है।[1]

खेल कोई शब्द या संज्ञा मात्र नहीं बल्कि यह एक सक्रिय, सचेतन और स्वाभाविक क्रिया है जो मन के तल पर सहज रूप से उठती है और आनंद की आस में जीव और जीवन, दोनों को हिलाती डुलाती रहती है।[2] अर्थात वे क्रियाएँ जिनसे शारीरिक व मानसिक रूप से आनंद की अनुभूति हो वे खेल है। खेल केवल शारीरिक गतिविधि ही नहीं है, बल्कि यह धर्म और दर्शन से मेल खाते हैं। भारतीय दार्शनिकों के अनुसार प्रभु ने खेल-खेल में ही इस दुनिया का निर्माण किया था।

खेलों का विकास

मानव सभ्यता के क्रमिक विकास के साथ ही खेलों का भी विकास हुआ। जंगलों में रहते हुए भोजन प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों एवं प्रतिस्पर्धाओं से विभिन्न खेल विकसित हुए। शिकार को पकड़ने के दौरान उसका पीछा करने और छीना झपटी से ही आज के रग्बी, बेसबॉल, दौड़, ऊंची कूद,लंबी कूद आदि खेलों का वर्तमान स्वरूप हमारे सामने आया। पलायन के दौरान नदियों को तैरकर पार करने और मछली पकड़ने की तकनीकों से ही तैराकी की विभिन्न स्पर्धाएँ विकसित हुई।

मनुष्य ने जंगली जानवरों से बचाव एवं आत्म सुरक्षा के लिए विभिन्न हथियार चलाना सीखा जिससे आज के भाला फेंक, तश्तरी फेंक, गोला फेंक आदि खेलों का जन्म हुआ। विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का उल्लेख तो पौराणिक ग्रंथों एवं कहानियों में भी मिलता है। रामायण और महाभारत के समय रथ दौड़, कुश्ती या मल्ल, तलवारबाजी, धनुर्विद्या जैसे खेलों की जानकारी मिलती हैं। भगवान श्रीराम का शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाना हो या फिर अर्जुन का प्रतिबिंब में देखकर मछली की आंख पर निशाना साधना, ये घटनाएँ खेल स्पर्धाओं को ही इंगित करती हैं।

खेल समाचार

बढ़ती लोकप्रियता के कारण खेल समाचार-पत्रों की भी सुर्खियाँ बनते हैं। आज राजनीति, अपराध, शिक्षा, धर्म, उद्योग के साथ खेल भी पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण बीट है। पहले जहाँ खेलों की कवरेज के लिए अन्य बीट के पत्रकारों को भेजकर सामान्य कवरेज करवा दी जाती थी। लेकिन धीरे-धीरे खेल प्रेमियों की भावनाओं को समझते हुए समाचार पत्रों में खेल पत्रकारों की विशेष नियुक्ति की जाने लगी। इसके साथ ही खेलों के लिए अलग से खेल डेस्क भी बनाई गई। वर्तमान में तो लगभग हर समाचार पत्र अपने अंक में खेलों के लिए अलग से एक खेल पृष्ठ निकालते हैं। प्रिंट मीडिया के साथ ही इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भी खेलों को विशेष महत्त्व दिया है। रेडियो एवं टीवी के

समाचार बुलेटिन में खेल समाचारों को शामिल किया जाता है। इसके अतिरिक्त 24 घंटे चलने वाले न्यूज चैनल भी प्रमुख मैचों से पहले एवं बाद में खेल विशेषज्ञों के साथ टीवी कार्यक्रम आयोजित करते हैं। समाचारों के लाइव प्रसारण के लिए भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने विशेष प्रयास किए हैं। रेडियो में प्रमुख मैचों की लाइव कमेंटरी की जाती है। प्रमुख खेल चैनल खेलों का जीवंत प्रसारण भी करते हैं। इसके साथ ही इंटरनेट पर विभिन्न पोर्टल खेलों की विषय वस्तु पर ही आधारित हैं जिन पर खेलों से संबंधित जानकारी साझा की जाती है।

खेल पत्रकारिता का विकास

खेल पत्रकारिता के इतिहास की बात की जाए तो इसकी शुरुआत 850 ईसा पूर्व के आसपास मानी जाती है। उस समय ग्रीक के विद्वान होमर ने कुश्ती की एक प्रतियोगिता के बारे में सबसे पहले लिखा। इसके बाद ग्रीस में हुई अन्य कुछ खेल प्रतियोगिताओं के बारे में भी लिखा गया। लेकिन खेल पत्रकारिता के बारे में व्यवस्थित शुरुआत 18वीं शताब्दी के मध्य से मानी जा सकती हैं। उस समय अमेरिका के लेखकों ने खेल आधारित समाचार लिखे। 18वीं शताब्दी के अंतिम दशक में 'द न्यूयॉर्क मैग्जीन' और 'द न्यूयॉर्क पोस्ट' में खेल समाचार लिखे गए। जोसेफ पुलित्जर द्वारा 'न्यूयॉर्क वर्ल्ड' खरीदने के बाद इसने खेल समाचारों पर विशेष कार्य किया। इसी की देखा देखी अन्य समाचार पत्रों ने भी खेल समाचारों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया।[3]

भारत में खेल समाचार शुरुआत में तो केवल सूचनात्मक आधार पर ही रहे जिसमें महत्वपूर्ण खेलों के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी दी जाती थी। इसके बाद 1940 से 70 तक यह समाचार सूचनात्मक से थोड़े विस्तृत होते हुए मनोरंजनात्मक हुए। 1970 के बाद के खेल समाचारों ने पत्रकारिता के मूल सिद्धांत सूचना देना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना के तीनों आयामों को छुआ। 1877 में बालकृष्ण भट्ट द्वारा संपादित 'प्रदीप' समाचार पत्र में खेल समाचार छपते थे, लेकिन वे सूचनात्मक ही रहे। उस समय बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल आदि क्षेत्रों में खेल प्रेमियों एवं वहाँ के निवासियों के लिए खेल समाचार एक आवश्यक तत्त्व रहा। आजादी के बाद 1950 के आसपास 'अमृत पत्रिका' में खेलों को प्रमुखता दी। इसके बाद वाराणसी से प्रकाशित 'आज' समाचार पत्र ने खेल समाचारों पर बेहतरीन कार्य किया। क्योंकि 'उदंत मार्तंड', 'प्रदीप', 'वेंकटेश्वर समाचार' आदि के बंद होने के बाद यह जिम्मेदारी 'आज' पर आ गई थी।[4]

बाबू सत्येंद्र कुमार गुप्त ने उस समय अपनी खेल डेस्क पर खेल पत्रकारों की नियुक्ति की और खेलों की लाइव रिपोर्टिंग के लिए अपने प्रतिनिधि को पाकिस्तान भी भेजा। हालांकि इससे पहले दैनिक सांध्य 'गांडीव' ने रेडियो कमेंटरी के आधार पर मैच समाप्ति के तुरंत बाद ही अपने सांध्य समाचार पत्र में खेल समाचार की पूरी कवरेज देकर सभी को चौंका दिया था। 'आज' के द्वारा खेल पत्रकार को विदेश भेज जाने के बाद 'दैनिक जागरण', 'अमर उजाला', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'स्वतंत्र भारत' आदि समाचार पत्रों ने भी खेलों के महत्त्व को समझा।[5]

हालांकि अंग्रेजी समाचार पत्रों के मुकाबले हिंदी पत्रकारिता थोड़ी कमजोर रही। इसका कारण था कि हिंदी एवं अन्य भाषायी पत्र उस समय स्वाधीनता संग्राम एवं स्वदेश प्रेम पर केंद्रित रहे। वहीं अंग्रेजी पत्रों पर विदेशी स्वामित्व के कारण उनमें खेल के कॉलम भी छपते थे।

भारत खेलों के क्षेत्र में उस समय विश्व पटल पर छाया जब 1928 में पहली बार भारतीय हॉकी टीम ने ओलंपिक का स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इसके बाद खेल पत्रकारिता के लिए 1951 का एशियाड मील का पत्थर साबित हुआ। दिल्ली में संपन्न यह खेल आयोजन भारतीय समाचार पत्रों में खेल समाचारों के लिए विशिष्ट रहा है। इस एशियाड के समय विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में खेलों पर विशिष्ट परिशिष्ट प्रकाशित किए और इसी के साथ अंग्रेजी के समाचार पत्रों में खेलों के लिए खेल पृष्ठ स्थाई हो गया।

हिंदी में खेल समाचारों को सबसे पहले 'नई दुनिया' ने अपनाया। इसके पीछे का कारण इंदौर में खेल प्रेमियों की संख्या और वहाँ का होल्कर परिवार रहा। जिसने न केवल बेहतरीन खिलाड़ी दिए बल्कि खेलों एवं खिलाड़ियों को संरक्षण भी दिया। होल्कर घराने की राजकुमारी अमृत कौर की योजना से ही देश के प्रथम राष्ट्रीय खेल संस्थान की स्थापना पटियाला में हुई। बीसवीं सदी के मध्य तक हिंदी भाषी क्षेत्रों में खेल समाचारों को समाचार पत्रों में कम ही महत्त्व दिया एवं इसके बाद छठे एवं सातवें दशक में इनकी गति कछुआ चाल जैसी ही रही। आठवें दशक में भी 'नवभारत टाइम्स', 'हिंदुस्तान' जैसे समाचार पत्रों में तीन से चार कॉलम के खेल समाचार ही प्रकाशित होते थे। उस समय 'अमृत प्रभात', 'भारत', 'आर्यावर्त', 'प्रदीप' आदि समाचार पत्र खेल समाचारों के लिए मात्र एजेंसी पर ही निर्भर रहते थे।[6]

समाचार पत्रों के साथ खेल पत्रिकाएँ भी खेल पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण पड़ाव रही हैं। शुरू में 'इंडिया टुडे', 'रविवार', 'फ्रंटलाइन', 'धर्म युग', 'आउटलुक' आदि पत्रिकाओं में खेल समाचार प्रकाशित हुए। कई बार इन्होंने खेल विशेषांक भी निकाले। 'स्पोर्ट्स वीक' को भारत की पहली खेल साप्ताहिक पत्रिका माना जाता है। खेलों पर आधारित खेल पत्रिकाओं की बात की जाए तो 'खेल हलचल', 'क्रिकेट सम्राट', 'खेल खिलाड़ी', 'खेल भारती', 'द स्पोर्ट्स' आदि पत्रिकाओं ने खेलों पर आधारित बेहतरीन सामग्री का प्रकाशन किया।[7]

मुद्रित जनसंचार माध्यमों के साथ इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम भी खेल पत्रकारिता के लिए विशेष माध्यम रहे। आकाशवाणी ने खेल कमेंटरी के माध्यम से बहुत लोकप्रियता हासिल की। शुरुआत में रेडियो की कमेंटरी फुटबॉल पर आधारित रही। 1930 के आसपास अंग्रेजी में खेल कमेंटरी की शुरुआत मानी जाती है। देवराज पूरी और ज्ञानेंद्र नारायण हिंदी कमेंटरी में शुरुआती कमेंटेटर रहे। हिंदी कमेंटरी में जसदेव सिंह एक जाना पहचाना नाम रहा है। जसदेव के अलावा जोगाराव, सुशील दोषी, रवि चतुर्वेदी, मुरली मनोहर मंजुल, हर्षा भोगले आदि ने विशेष नाम कमाया हैं।

टेलीविजन में 1970 के अंत तक क्रिकेट का लाइव प्रसारण शुरू हो गया था। लेकिन दूरदर्शन पर 1982 के एशियाड से रंगीन प्रसारण की शुरुआत हुई जिसने दूरदर्शन की लोकप्रियता में चार चाँद लगा दिए। इसके बाद विभिन्न खेलों का लाइव प्रसारण किया जाने लगा। खेलों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण डीडी स्पोर्ट्स के नाम से नया चैनल लांच हुआ जिस पर केवल खेलों का प्रसारण एवं खेल कार्यक्रम प्रसारित होते थे। खेलों की लोकप्रियता के कारण कई प्राइवेट स्पोर्ट्स चैनल भी आए। जिसमें ईएसपीएन, टेन स्पोर्ट्स, स्टार स्पोर्ट्स, सोनी आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।[8]

खेल पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप एवं भविष्य

वर्तमान में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की खबरें समाचार पत्र पत्रिकाओं में खेल पृष्ठ के साथ ही मुख्य पृष्ठ पर भी छाई रहती हैं। कई बार तो खेल की खबरें समाचार पत्रों की लीड खबर तक बनती हैं। भविष्य में खेल पत्रकारिता का यह स्वरूप और अधिक विस्तृत होने की संभावना है। इंटरनेट के कारण अब खेलों से संबंधित विभिन्न पोर्टल एवं मोबाइल एप्लीकेशन उपलब्ध हैं। ये विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं की लाइव अपडेट्स तो देते ही हैं साथ ही खेल प्रतियोगिताओं के विभिन्न मैचों का विश्लेषण भी प्रस्तुत करते हैं। तकनीक का बढ़ता उपयोग समाचार पत्रों ने भी किया है समाचार पत्रों ने इंटरनेट पर अपनी वेबसाइट पर खेलों के लिए अलग से श्रेणी निर्धारित कर रखी है जिसमें राजनीति, सिनेमा, अपराध, बाजार एवं व्यवसाय के साथ ही खेल समाचारों के लिए अलग से खबरें निर्धारित रहती है। इसमें महत्त्वपूर्ण खेलों के समाचार समय-समय पर अपडेट होते रहते हैं। इसके अलावा प्रमुख मैचों की लाइव अपडेट्स और स्कोर बोर्ड इन वेब पोर्टल, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन पर उपलब्ध रहता है। इसके अलावा भविष्य में खेल आधारित प्लेटफार्म की संख्या में बढ़ोतरी की संभावना है।

अधिकतर समाचार पत्रों के मोबाइल एप्लीकेशन उपलब्ध है, साथ ही कई ओटीटी प्लेटफॉर्म पर विभिन्न टीवी चैनल भी लाइव प्रसारित होते हैं। जिन्हें मोबाइल स्क्रीन पर स्ट्रीम किया जा सकता है। इसके साथ ही खेलों पर आधारित कई मोबाइल एप्लीकेशन भी उपलब्ध है जिन पर पुराने मैच के स्कोर कार्ड, आने वाले मैचों के शेड्यूल्स, खिलाड़ियों एवं टीमों के पुराने रिकॉर्ड आदि उपलब्ध है। इन पर खेलों से संबंधित विभिन्न जानकारियाँ अपडेट होती रहती हैं जिसके कारण आने वाले समय में मोबाइल आधारित खेल पत्रकारिता को बढ़ावा मिलेगा। इस ई-कंटेंट आधारित खेल पत्रकारिता में पुराने जनसंचार माध्यमों के लिए कई प्रकार की चुनौतियाँ सामने आएगी। इसके लिए उन्हें अपने पुराने माध्यमों पर तो सक्रिय रहना ही होगा साथ ही समय अनुसार कई परिवर्तन भी करने होंगे ताकि इस प्रतिस्पर्धी दौर में अपने आप को पुराने माध्यम पर स्थाई रूप से स्थापित रख पाएं।

सन्दर्भ:-

1. डॉ. संजय आर. आगासे : खेल पत्रकारिता, खेल साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली (2012), पृ.स.- 2
2. प्रो. अनिल कुमार उपाध्याय, डॉ. प्रभा शंकर मिश्र : खेल पत्रकारिता, भारती प्रकाशन, वाराणसी (2018), पृ.स.- 15
3. डॉ. आशीष द्विवेदी : खेऽल पत्रकारिता के आयाम, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली (2021), पृ.सं.- 145
4. पद्मपति शर्मा : खेल पत्रकारिता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली (2011) , पृ.सं.- 20,21
5. पद्मपति शर्मा : खेल पत्रकारिता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली (2011) , पृ.सं.- 35,38
6. पद्मपति शर्मा : खेल पत्रकारिता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली (2011), पृ.सं.- 34-36
7. प्रो. अनिल कुमार उपाध्याय, डॉ. प्रभा शंकर मिश्र : खेल पत्रकारिता, भारती प्रकाशन, वाराणसी (2018), पृ.सं.- 130
8. डॉ. आशीष द्विवेदी : खेल पत्रकारिता के आयाम, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली (2021), पृ.सं.- 147,236,237